❍ 18 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗स्वधर्म में स्थित रह साइलेंस का अनुभव किया ?∗

➢➢ ∗कांटो को फूल बनाने की सेवा की ?∗

➢➢ ∗सर्व शक्तियों से संपन्न बन हर शक्ति को कार्य में लगाया ?∗

➢➢ ∗प्राप्तियों को सदा सामने रखा ?∗

────────────────────────

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

〰✧ ∗जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्ठी में पड़े हुए थे।∗ यह 14 वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की कोई कमी नहीं हैं लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। ∗आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती।∗

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बाप समान न्यारा और प्यारा हूँ"*

〰✧ सदा अपने को जैसे बाप न्यारा और प्यारा है, ऐसे न्यारे और प्यारे अनुभव करते हो? बाप सबका प्यारा क्यों है? क्योंकि न्यारा है। जितना न्यारा बनते हैं उतना सर्व का प्यारा बनते हैं। न्यारा किससे? *पहले अपनी देह की स्मृति से न्यारा। जितना देह की स्मृति से न्यारे होंगे उतने बाप के भी प्यारे और सर्व के भी प्यारे होंगे। क्योंकि न्यारा अर्थात् आत्म-अभिमानी। जब बीच में देह का भान आता है तो प्यारापन खत्म हो जाता है। इसलिए बाप समान सदा न्यारे और सर्व के प्यारे बनो।*

〰✧ आत्मा रूप में किसको भी देखेंगे तो रूहानी प्यारा पैदा होगा ना। और देहभान से देखेंगे तो व्यक्त भाव होने के कारण अनेक भाव उत्पन्न होंगे-कभी अच्छा होगा, कभी बुरा होगा। लेकिन आत्मिक-भाव में, आत्मिक दृष्टि में, आत्मिक वृत्ति में रहने वाला जिसके भी सम्बन्ध में आयेगा अति प्यारा लगेगा। तो सेकेण्ड में न्यारे हो सकते हो? कि टाइम लगेगा? *जैसे शरीर में आना सहज लगता है, ऐसे शरीर से परे होना इतना ही सहज हो जाये। कोई भी पुराना स्वभाव-संस्कार अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे और सेकेण्ड में न्यारे हो जाओ।*

〰✧ सारे दिन में, बीच-बीच में यह अभ्यास करो। *ऐसे नहीं कि जिस समय याद में बैठो उस समय अशरीरी स्थिति का अनुभव करो। नहीं। चलते-फिरते बीच-बीच में यह अभ्यास पक्का करो- 'मैं हूँ ही आत्मा!' तो आत्मा का स्वरूप ज्यादा याद होना चाहिए ना! सदा खुशी होती है ना!* कम नहीं होनी चाहिए, बढ़नी चाहिए। इसका साधन बताया-मेरा बाबा। और कुछ भी भूल जाये लेकिन 'मेरा बाबा' यह भूले नहीं।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ बापदादा सभी बच्चों को सम्पन्न स्वरूप बनाने के लिए रोज-रोज भिन्न-भिन्न प्रकार से प्वाइंटस बताते रहते हैं। *सभी प्वाइंटस का सार है, सभी को सार में समाए बिन्दु बन जाओ।* यह अभ्यास निरंतर रहता है?

〰✧ कोई भी कर्म करते हुए यह स्मृति रहती है कि - *'मैं ज्योति बिन्दु इन कर्मेन्द्रियों द्वारा यह कर्म कराने वाला हूँ।'* यह पहला पाठ स्वरूप में लाया है? आदि भी यही है और अंत में भी इसी स्वरूप में स्थित हो जाना है। तो सेकण्ड का ज्ञान, सेकण्ड के ज्ञान स्वरूप बने हो? विस्तार को समाने के लिए एक सेकण्ड का अभ्यास है।

〰✧ जितना विस्तार में आना सहज है उतना ही सार स्वरूप में आना सहज अनुभव होता है? सार स्वरूप में स्थित हो फिर विस्तार में आना यह बात भूल तो नहीं जाते हो? सार स्वरूप में स्थित हो विस्तार में आने से कोई भी प्रकार के विस्तार की आकर्षण नहीं होगी। *विस्तार को देखते, सुनते, वर्णन करते ऐसे अनुभव करेंगे जैसे एक खेल कर रहे हैं। ऐसा अभ्यास सदा कायम रहे। *इसको ही 'सहज याद' कहा जाता है।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *एवररेडी अर्थात् साथ चलने के लिए समान बनी हुई आत्मा साक्षात्कार द्वारा आत्मा को नहीं देखेंगी लेकिन बुद्धियोग द्वारा सदा स्वयं को साक्षात् 'ज्योति बिन्दु आत्मा' अनुभव करेगी। साक्षात् स्वरूप बनना सदाकाल है और साक्षात्कार अल्पकाल का है।* साक्षात स्वरूप आत्मा कभी भी यह नहीं कह सकती कि मैंने आत्मा का साक्षात्कार नहीं किया है। मैंने देखा नहीं है। लेकिन वह अनुभव द्वारा साक्षात् रूप की स्थिति में स्थित रहेंगी। *जहाँ साक्षात स्वरूप होगा वहाँ साक्षात्कार की आवश्यकता नहीं। ऐसे साक्षात आत्मा स्वरूप की अनुभूति करने वाले अथार्टी से, निश्चय से कहेंगे कि मैंने आत्मा को देखा तो क्या लेकिन अनुभव किया है। क्योंकि देखने के बाद भी अनुभव नहीं किया तो फिर देखना कोई काम का नहीं।* तो ऐसे साक्षात् आत्म-अनुभवी चलते-फिरते अपने ज्योति-स्वरूप का अनुभव करते रहेंगे।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप की नजर से निहाल हो, स्वर्ग का मालिक बनना"*

➳ _ ➳ मै आत्मा अपने मनमीत बाबा को याद करते करते उड़ चली... और शांतिवन के कमरे में पहुंची... मीठे बाबा, ब्रह्मा तन में मुस्कराते बाहें फैलाये कहने लगे... आओ मेरे मीठे बच्चे... मै आत्मा मीठे बाबा के8 स्नेह वचनो की प्यासी... यह मधुर वाक्य सुनते ही तृप्त सी हो गयी... *प्यारे बाबा मुझे अपनी अनन्त शक्तियो से लबालब कर रहे है.*.. और मै आत्मा दीवानी अपलक सी... अपने प्यारे दीवाने बाबा को निहारती जा रही हूँ... मीठे बाबा का कमरा हमारे मधुर मिलन की स्थली बन गया...

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को नई दुनिया का मालिक बनाने को आतुर हो बोले :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... ईश्वर पिता के सिवाय कोई और इस धरती पर सदा के सुखो की जागीर दे नही सकता... *ईश्वर ही सतगुरु बन नजरो से निहाल करता है.*.. और खुशियो भरे जीवन को गढ़ने का राज समझाता है... ऐसे जादूगर पिता को हर पल यादो में बसा लो..."

➳ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा के ज्ञान रत्नों को अपनी बुद्धि रुपी झोली

में समाते हुए बोली :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... ईश्वर को ही सतगुरु रूप में पा लिया... ऐसा प्यारा भाग्य पाकर, अपने मीठे भाग्य की भी मै आत्मा शुक्रगुजार हूँ... *कब सोचा था कि यूँ कारुन का खजाना मेरे हाथ आ जायेगा.*.. और ईश्वरीय दौलत से मै मालामाल हो जाउंगी..."

❊ *प्यारे बाबा मुस्कराते हुए और बड़ी ही उम्मीदों से मुझे निहारते हुए बोले :-* "मीठे लाडले बच्चे... ईश्वरीय खजानो से सम्पन्न बनकर, सदा के समझदार बन जाओ... *ईश्वर पिता ने अपनी सारी खाने आप बच्चों के लिए खोल दी है.*.. जितनी चाहे उतनी दौलत बटोर लो... और अशरीरी बनकर मीठी प्यारी यादो में डूब जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने मीठे भाग्य को निहारते हुए बाबा से कह रही हूँ :-* "ओ प्यारे प्यारे बाबा मेरे... देह और देह की दुनिया से दिल लगाकर, मुझ आत्मा ने खुद को कितना ठगा सा है... अब जो *आपने जीवन में आकर ज्ञान और योग की खुबसूरत बहार खिलाई है.*.. मै आत्मा अपने खोये खजाने पुनः पाती जा रही हूँ..."

❊ *मीठे प्यारे बाबा गुणो और शक्तियो की वर्षा से मेरे मन बुद्धि को भिगोते हुए बोले :-* "मीठे सिकीलधे बच्चे... शरीर के अहसासो से अछूते बन, अशरीरी का अभ्यास कर, निरन्तर यादो में रहो... अपने *मीठे घर की स्मर्तियो में खोये हुए, सदा साइलेन्स की स्थिति का अनुभव करो.*.. और सदा मीठे बाबा के सम्मुख रह नजरो से निहाल बनो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा का रोम रोम से शुक्रगुजार करते हुए बोली :-* "मेरे मन के मीत बाबा... *आपने सच्चे प्रेम को देकर मेरे जीवन को कितना प्यारा और गुणो से सुगन्धित बना दिया है.*.. मै आत्मा आपकी नजरो के साये में रह, खुबसूरत सुखो की स्वामिन् होती जा रही हूँ... अपना खोया साम्राज्य पाकर पुनः विश्व की मालिक सी सज रही हूँ..." ऐसी प्यारी बाते करके, तृप्त होकर मै आत्मा धरती पर आ चली...

_____

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- किसी को भी दुख नही देना है*"

➳ _ ➳ दुखों से लिबरेट कर, सबको सुख देने वाले दुख हर्ता सुख कर्ता, सदा कल्याणकारी *अपने सदाशिव भगवान बाप समान मास्टर दुख हर्ता सुख कर्ता बन सबको खुशी देने और डबल अहिंसक बन मन, वचन, कर्म से कभी भी किसी को दुख ना देने का स्वयं से वायदा कर, मैं दया के सागर, सुख के सागर अपने निराकार शिव पिता की याद में अपने मन बुद्धि को एकाग्र करती हूँ* और उनके पास ले जाने वाली अति सुखदायी आंतरिक यात्रा पर धीरे - धीरे अग्रसर होती हूँ। मन और बुद्धि जैसे - जैसे स्थिर होने लगते हैं और जैसे - जैसे एकाग्रता की शक्ति बढ़ने लगती है मुझे मेरा वास्तविक स्वरूप बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देने लगता है।

➳ _ ➳ अपनी साकार देह में अपनी दोनों आइब्रोज़ के बीच अपने आपको एक चमकते हुए सितारे के रूप में मैं देख रही हूँ। *उस सितारे में से निकल रहा भीना - भीना प्रकाश मुझे बहुत सुखद एहसास करवा रहा है और उस प्रकाश की सतरँगी किरणों में अपने अंदर निहित सातों गुणों के वायब्रेशन्स को अपने मस्तक से निकल कर, चारो ओर फैलता हुआ मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ*। अपने निज स्वरूप से निकल रहे इन सातों गुणों के वायब्रेशन्स को एक रंग बिरंगे फव्वारे से निकल रही फ़ुहारों के रूप में अपने ही शरीर पर पड़ता हुआ मैं अनुभव कर रही हूँ।

➳ _ ➳ मैं देख रही हूँ जैसे - जैसे ये फुहारें मेरे शरीर पर पड़ रही है मेरे शरीर के सभी अंग एक - एक करके शिथिल हो रहें हैं। अपने आपको मैं एक

दम रिलेक्स महसूस कर रही हूँ। *ऐसा लग रहा है जैसे शरीर का भान बिल्कुल समाप्त हो गया है और मैं बिल्कुल अशरीरी हो गई हूँ*। जैसे मक्खन से बाल निकलता है ऐसे इस अशरीरी अवस्था में मैं आत्मा बिल्कुल सहज रीति देह से बिल्कुल न्यारी होकर अब भृकुटि के अकालतख्त को छोड़ उससे बाहर आ गई हूँ।

➳ _ ➳ दैहिक दुनिया के हर बन्धन से मुक्त इस अवस्था मे मैं स्वयं को बहुत हल्का महसूस कर रही हूँ। यह हल्कापन मुझे धरनी के आकर्षण से मुक्त करके, ऊपर की ओर उड़ा रहा है। *धीरे - धीरे मैं चमकता सितारा अपनी खूबसूरत आंतरिक यात्रा के इस पहले को पड़ाव को पार कर अब ऊपर आकाश की ओर जा रहा हूँ*। निरन्तर अपनी मंजिल की ओर बढ़ती हुई मैं चैतन्य शक्ति आत्मा आकाश को पार कर, उससे ऊपर सूक्ष्म वतन को पार करती हुई अब अपनी मंजिल, अपने शांति धाम घर में अपने सुख सागर बाबा के पास पहुँच चुकी हूँ।

➳ _ ➳ बाबा के पास पहुँच कर उनसे आ रही सुख की किरणों के शीतल झरने के नीचे खड़ी होकर मैं स्वयं को उनके सुख की किरणों से भरपूर कर स्वयं को उनके समान मास्टर सुख का सागर बना रही हूँ। *बाबा से आ रही सुख की पीले रंग की शक्तियों का झरना झर - झर करके मेरे ऊपर बहता ही जा रहा है और उन शक्तियों को मैं अपने अन्दर गहराई तक समाती जा रही हूँ*। अपने सुख सागर बाबा से सुख की अनन्त शक्ति अपने अंदर भरकर मैं वापिस साकारी दुनिया में अपने कर्मक्षेत्र पर लौटती हूँ।

➳ _ ➳ अपने सुख सागर बाप से अपने अंदर भरी हुई सुख की शक्ति मुझे बाप समान मास्टर दुख हर्ता सुख कर्ता बना रही है। अपने सम्बन्ध, सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा पर रहम की दृष्टि रखते हुए, सुख के वायब्रेशन उन्हें देकर मैं सबको सुख का अनुभव करवा रही हूँ। *कैसे भी स्वभाव संस्कार वाली आत्मा मेरे सम्पर्क में क्यो ना आये, किन्तु डबल अहिंसक बन मन, वचन, कर्म से किसी को भी दख ना पहँचाकर, सबके प्रति शभभावना शभकामना रखते हए,

मैं मास्टर सुख का सागर बन सबको सुख देकर, सबकी दुआयों की पात्र आत्मा बन रही हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं सर्व शक्तियों से सम्पन्न बन हर शक्ति को कार्य मे लगाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव प्राप्तियों को सामने रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा प्राप्तियों को भूलने से सदा मुक्त हूँ ।*
✺ *मैं अथक आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अपने को सदा सेवाधारी समझकर सेवा पर उपस्थित रहते हो ना? सेवा की सफलता का आधार, सेवाधारी के लिए विशेष क्या है? जानते हो? सेवाधारी सदा यही चाहते हैं कि सफलता हो लेकिन सफल होने का अधार क्या है? आजकल विशेष किस बात पर अटेन्शन दिला रहे हैं? (त्याग पर) *बिना त्याग और तपस्या के सफलता नहीं। तो सेवाधारी अर्थात् त्याग मूर्त और तपस्वी मूर्त*।

➳ _ ➳ *तपस्या क्या है? 'एक बाप दूसरा न कोई' यह है हर समय की तपस्या।*

➳ _ ➳ और त्याग कौनसा है? उस पर तो बहुत सुनाया है लेकिन *सार रूप में सेवाधारी का त्याग - जैसा समय, जैसी समस्यायें हो, जैसे व्यक्ति हों वैसे स्वयं को मोल्ड कर स्व कल्याण और औरों का कल्याण करने के लिए सदा इजी रहें।* जैसी परिस्थिति हो अर्थात् कहाँ अपने नाम का त्याग करना पड़े, कहाँ संस्कारों का, कहाँ व्यर्थ संकल्पों का, कहाँ स्थूल अल्पकाल के साधनों का... तो उस परिस्थिति और समय अनुसार अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना सकें, *कैसा भी त्याग उसके लिए करना पड़े तो कर लें, अपने को मोल्ड कर लें, इसको कहा जाता है - 'त्याग मूर्त'।* त्याग, तपस्या फिर सेवा। त्याग और तपस्या ही सेवा की सफलता का आधार है। *तो ऐसे त्यागी जो त्याग का भी अभिमान न आये कि मैंने त्याग किया। अगर यह संकल्प भी आता तो यह भी त्याग नहीं हुआ*।

✺ *"ड्रिल :- त्याग और तपस्या के आधार पर सेवा में सफलता प्राप्त करना।"*

➳ _ ➳ देह रूपी पारदर्शी डिबिया में दमकती, मैं आत्मा मणि, अपने गुणों व शक्तियों के प्रकाश से इस देह को भी आभा युक्त कर रही हूँ... *(दृश्य चित्र बनाकर कछ देर महसस कीजिए इस दृश्य को)* मैं आत्मा. उदय होता हआ सर्य

और मेरे आसपास ये देह रूपी बादल... आहिस्ता-आहिस्ता ये बादल मेरे चारों और से हटने लगे है... और अब मैं आत्मा, अपने सम्पूर्ण प्रकाशमान रूप में... मेरा प्रकाश आसपास के वातावरण में प्रकाश के दरिया के रूप प्रवाहित हो रहा है... देखे स्वयं कों, प्रकाश के सागर में तैरते हुए... इस सागर की रंग बिरंगी लहरें कभी मुझे गहराई में लेकर जा रही है और कभी मैं लहरों के ऊपर अठखेलियाँ कर रही हूँ... *तपस्या की लगन में डूबी, एक बाप दूसरा न कोई इसी एक सकंल्प को लिए मैं मस्तक मणि, जा पहुँचती हूँ परम धाम में*...

➳ _ ➳ असंख्य सुन्दर मणियों से भरा हुआ जैसे कोई पारदर्शी -सा, भव्य और विशाल शीशे का जार... जार के ऊपर चमकता लाल रंग का शिव रत्नाकर, चमचमाती मणि के रूप में... और इस मणि के सबसे करीब, अपनी सम्पूर्ण आभा बिखेरता मैं नन्हा सा प्रकाश कण... अपनी किस्मत पर इठलाता हुआ... बस एक की ही लगन में मगन होता हुआ... फरिश्ता रूप में मैं रूहानी मणि उतरती हूँ अब सूक्ष्म लोक में... और बापदादा का हाथ पकडे उसी झील के किनारे जो, मेरे और बापदादा के रूहानी स्नेह की साक्षी है... *मैं देख रही हूँ आकाश में, बादलों के पीछे से झाँकने का प्रयास करता सूरज, और सूरज की लालिमा से सिन्दूरी रंग में रंगे ये बादल... बादल और सूरज दोनों ही अथक सेवाधारी है...*

➳ _ ➳ तभी बापदादा मेरे हाथ पकडे मुझे सामने के पर्वत पर चलने का इशारा कर रहे है... मैं फरिश्ता शिखर पर जाकर बैठ गया हूँ बादलों के ढेर के ऊपर और छोटी-छोटी सी गेंद बनाकर फेंक रहा हूँ उन्हें झील के पानी में... अपना वजूद मिटाकर पानी होते ये बादल... मगर दूसरे ही पल फिर झील से धुएँ के रूप में फिर से बनकर उडते ये बादल... *सर्वस्व त्याग का पाठ पढा रहे हैं... धरा की तपन मिटाने की सेवा और उस एक धुन में सर्वस्व त्याग का अनोखा उदाहरण बन गये है ये... तभी बाप दादा मेरे हाथों में पकडे हुए छोटे छोटे नन्हें रंगीन गुब्बारों की तरफ इशारा करके मानों पूछ रहें हों*, बच्चे- "ये नाम, संस्कार, व्यर्थ संकल्पों और अल्पकाल के साधनों का त्याग कब तक करोगे...

➳ _ ➳ और मैं, तुलना कर रहा हूँ, इन बादलों की त्यागवृत्ति से स्वयं की... कितना लचीलापन है इनमें, हवाओं के अनुसार स्वयं को किसी भी आकार में ढाल लेते है ये... *जो स्वयं को कैसे भी त्याग के लिए मोल्ड कर ले, ऐसी ही त्याग वृत्ति मुझे धारण करनी है, और ऐसा निश्चय कर मैंने वो सभी रंगीन गुब्बारें हवा में छोड दिए... आकाश में दूर दूर तक फैल गये है ये संस्कार, व्यर्थ संकल्पों और अल्पकाल के साधन रूपी गुब्बारें*... हवाओं में कलाबाजियाँ खाते हुए... और मैं देख रहा हूँ इनको खुद से दूर जाते हुए... दूर... बहुत दूर... और देखते ही देखते आँखों से ओझल हो गये है वे सभी...

➳ _ ➳ *मैं देख रहा हूँ अपने दोनो हाथों को, कितना आराम महसूस कर रहे हैं मेरे दोनो हाथ... मुद्दतों के बाद आज मैं अपनी हथेली खोल रहा हूँ, बन्द कर रहा हूँ, आजादी के साथ*... असीम सुख का एहसास... *त्याग के सुख की गहरी अनुभूति हो रही है आज मुझे*... एक लम्बी और गहरी स्वाँस के साथ, मैं देख रहा हूँ बापदादा की ओर... और बस देखे जा रहा हूँ एकटक, कृतज्ञता आँखों में भर कर... जैसे कोई चातक पक्षी दिन रात बादलों को निहारता है... और बापदादा बरसते बादलों की तरह स्नेह बरसा रहे हैं मेरे ऊपर... *त्याग के भी त्याग का सुख आज महसूस हुआ है मुझ आत्मा को*... सर्व के कल्याण की भावना मन में समाये, मैं आत्मा वापस लौट आयी हूँ, अपनी देह रूपी डिबियाँ में... *त्याग और तपस्या के आधार पर सेवा में सफलता प्राप्त करने का दृढ निश्चय मन में लिए*... ओम शान्ति...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔